Raj Express (Indore), 29th August 2020, Page-5

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में संस्कृत बना रही है स्थान

-आईआईटी इंदौर ने की पहल, -शास्त्रीय वैज्ञानिक ग्रंथों का उनके मूल रुप में अध्ययन करने और समझाने के लिए पाठ्यक्रम का किया संचालन- दुनियाभर के 750 से अधिक प्रतिभागियों द्वारा इस कोर्स में दिखाई गई रुचि

इंदौर ■ राज न्यूज नेटवर्क

आईआईटी इंदौर ने एक पहल के तहत शास्त्रीय वैज्ञानिक ग्रंथों का उनके मूल रुप में अध्ययन करने और उनके बारे में समझाने के लिए एक पाठ्यक्रम का संचालन किया है। 22 अगस्त से 2 अक्टूबर 2020 तक चलने वाले पाठ्यक्रम को दो भागों में बांटा गया है। पाठ्यक्रम के पहले भाग का मुख्य लक्ष्य प्रतिभागियों को संस्कृत समझने के लिए कौशल और आत्मविश्वास विकसित करना है। यह उन लोगों के लिए हैं जिन्हें संस्कृत का पूर्व ज्ञान नहीं है। पाठ्यक्रम के दूसरे भाग का उद्देश्य प्रतिभागियों को संस्कृत में तकनीकी विषयों पर चर्चा करने में सक्षम बनाना है। इस भाग में जाने-माने विशेषज्ञों द्वारा शास्त्रीय गठित के पाठ भास्कराचार्य की लीलावती के व्याख्यान शामिल है। व्याख्यान के बाद एक संस्कृत भाषा विशेषज्ञ द्वारा संस्कृत में चर्चा होगी। पाठ्यक्रम पूरा करने के प्रमाण पत्र के लिए सभी प्रतिभागियों को सुविधाजनक चर्चा में भाग लेना अनिवार्य है। प्रो. नीलेश कुमार जैन, निदेशक (कार्यवाहक) ने इस कोर्स का उद्घाटन किया और कहा कि संस्कृत एक प्राचीन भाषा है। यह अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में अपना स्थान बना रही है और भविष्य की भाषा भी बनेगी। हमने इस भाषा के साथ लोगों को केवल एक शौक के रुप में ही नहीं बल्कि एक आवश्यकता के रुप में फिर से जोड़ने की पहल की है, क्योंकि यह पाठ्यक्रम संस्कृत में तकनीकी सिखाता है।

अधिकांश पारंपरिक इंडिक वैज्ञानिक ग्रंथ संस्कृत में हैं: आईआईटी इंदौर के बायोसाइंसेज एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग में प्रोफेसर डॉ. जीएस मूर्ति पाठ्यक्रम के समन्वयक है। उन्होंने कहा अधिकांश पारंपरिक इंडिक वैज्ञानिक ग्रंथ जैसे कि स्थायी जल संसाधन प्रबंधन, कृषि, गणित, धातु विज्ञान, खगोल विज्ञान, चिकित्सा, पादप विज्ञान, आर्थिक और राजनीतिक ग्रंथों जैसे अस्त्र-शस्त्र सभी संस्कृत में है। इन ग्रंथों के अध्ययन के लिए संस्कृत को समझना, भारत की वैज्ञानिक विरासत को संरक्षित करने और आगे बढ़ाने के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। इस पाठ्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य प्रतिभागियों को उनके मूल रुप में शास्त्रीय वैज्ञानिक ग्रंथों का अध्ययन करने और उनके बारे में संस्कृत में समझाने के लिए प्रोत्साहित करना है। दुनियाभर के 750 से अधिक प्रतिभागियों द्वारा इस कोर्स में दिखाई गई रुचि से हमें खुद आश्चर्य हुआ है। पाठ्यक्रम का संचालन करने वाले विशेषज्ञ प्रमोद पंडित, मयूरी फड़के, प्रवेष वैष्णव, संस्कार भारती, मध्यक्षेत्र, भरतम हैं। तकनीकी विशेष आईआईटी बॉम्बे के प्रोफेसर के. रामसुब्रमण्यन और डॉ. के. महेश हैं।